सृष्टिचक्र में मुझ आत्मा की भूमिका की शाश्वतता का अनुभव

लक्ष: अध्यात्म विज्ञान के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक है "आत्मा, परमात्मा तथा विश्व नाटक की शाश्वतता वा नित्यता का सिद्धांत"| इस सिद्धांत के अनुसार जीवात्माए, सर्वोच्च परमपिता परमात्मा एवं प्रकृति के बिच खेला जा रहा यह विश्वनाटक शाश्वत एवं सनातन है। इसलिये, न सिर्फ आत्मा ही अनादि अविनाशी है, बल्कि इस विश्वनाटक में उसकी भूमिका भी शाश्वत और सनातन है। आत्मा की नित्यता का कोई अर्थ नहीं होगा, यदि उसकी भूमिका नित्य नहीं है। इसलिए स्व की पहचान के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है मुज़ आत्मा की शाश्वतता और विश्व नाटक में मेरी अनादि अविनाशी भूमिका| विश्वनाटक में संगमयुग का सिर्फ यही समय है, जब मैं इनका अनुभव कर सकता हूं| निम्नलिखित योगाभ्यास इस अनुभूति के लिए उपयोगी हो सकता है।

योगाभ्यास:

आरामदायक मुद्रा में बैठें और अपने शरीर को शिथिल होने दे, कुछ गहरी सांसें लेते हुए तनाव वा व्यग्रता से मुक्त हो जाए। अब अपने भौतिक और सूक्ष्म शरीर को इमर्ज कर अपने मनःचक्षु द्वारा उसका मानस दर्शन करें। अपना ध्यान अपने मष्तिस्क के केंद्र में केंद्रित करें और स्वयं को दिव्य तथा चमकते हुए ज्योर्तिबिंदु के स्वरूप में देखे| अब द्रढ़तापूर्वक इस प्रकार स्वसुचन करें.....

"मैं एक आत्मा हूं ... मेरे भौतिक और सूक्ष्म शरीर से अलग प्रकाश का एक चमकता हुआ सितारा हूँ..... दोनों देह मुझ आत्मा के सिर्फ वस्त्र मात्र हैं.... इस विश्व नाटक में मेरी भूमिका निभाने के लिए साधन मात्र हैं... मैं आत्मा अति सुक्ष्म हूँ.... दिव्य प्रकाश और शक्ति का पूंज हूँ.... प्रकृति के पांच तत्वों से बना हुआ मेरा यह भौतिक शरीर विनाशी है, लेकिन मैं आत्मा अविनाशी तथा अनादि हूँ..... मेरी शाश्वतता और सनातनता मेरा बहुत महत्वपूर्ण मौलिक गुण हैं..... इसके कारण मैं अक्षय, अविभाज्य, अविनाशी हूँ... मेरा चैतन्य प्रकाशबिंदु के रूप में अस्तित्व अनादी समय से है और अनंत काल तक बना रहेगा..... मेरा न कोई आदि है, न कोई अंत है..... मैं अनादि, अनंत हूँ.....

यह विश्व नाटक भी अनादि है और अविनाशी है..... इस अनादि-अविनाशी नाटक में मेरा पार्ट भी अनादि - अविनाशी है.... इस चक्रीय विश्व नाटक में मेरा अभिनय भी सृष्टिचक्र के आदि से लेकर अंत तक है....

मैं पुरे 84 जन्म लेता हूँ... यह 84 जन्मों के अभिनय का मैंने अनंत बार पुनरावर्तन किया है और भविष्य में भी अनंत बार पुनरावर्तन करता रहूँगा..... प्रत्येक चक्र के प्रत्येक जन्म में मैं पुरानी देह को छोड़कर एक नइ देह को धारण करता हूँ..... लेकिन आत्मिक रूप से मेरा जीवन निरंतर है.... मेरी भूमिका भी निरंतर है...

मैं इस विश्व नाटक के चक्र में अपनी भूमिका निभाने के लिए अपना पार्ट स्वर्णिमयुग की शुरुआत से ही प्रारंभ करता हूँ..... मैं परमधाम को छोड़कर टिमटिमाते हुए सीतारे के रूप में पृथ्वी पर अवतरित होता हूं और प्रथम लक्ष्मी नारायण के राज्य में देवी--देवता के रूप में अपना पहला जन्म लेता हूं..... यहाँ मै उच्चतम स्तर की पवित्रता, शांति और समृद्धि का अनुभव करता हूँ..... यहाँ मेरा

भौतिक शरीर अत्यंत सुंदर, पवित्र और स्वस्थ है..... प्रचुर मात्रा में धन-संपत्ति और अनहद खुशी है..... यहाँ मैं पूरी तरह से निर्विकारी हूँ तथा सभी मूल्यों और सदगुणों से भरपूर हूँ..... यहाँ मैं 16 कला संपूर्ण हूँ.... प्रकृति के पांचो तत्व भी पूरी तरह से पवित्र हैं और मेरी सर्वोत्तम सेवा करते हैं.... स्वर्णिमयुग में अपना अभिनय मैं 8 जन्मो के लिए करता हूँ.....

फिर शुरू होता है त्रेतायुग, जहां मैं राम सीता के राज्य में 12 जन्म लेता हूं... मेरे ये जन्म भी निर्विकारी, पवित्र, शांतिपूर्ण और आनंदमय हैं.....यहां स्वास्थ्य, धन दौलत तथा खुशियाँ असीमित है..... यहाँ मैं 14 कला संपूर्ण होता हूँ..... मैं 2500 वर्षों में अपने 20 निर्विकारी जन्म स्वर्णिमयुग और रजतयुग में पूरा करता हूं.....

फिर द्वापरयुग का प्रारंभ होता है... यहाँ मेरी आत्मिक स्थिति विस्मृत हो जाती है और देह-अभिमान में आता हूँ.... इसके कारण मैं आत्मा, विकारो के प्रभाव में आ जाता हूं और पापकर्म करना शुरू कर देता हूं..... परिणाम स्वरूप मैं दुःख, अशांति, रोग, शोक, कष्ट से पीड़ित होने लगता हूं... इसके कारण मेरी बुद्धि सर्व शक्तिवान इश्वर की ओर जाती है.... मैं प्रार्थना और भगवान की पूजा करने लगता हूँ.... यहाँ मैं जो पूज्य था अब पुजारी बन जाता हूँ... ..इस द्वापरयुग के 1250 वर्षों में 21 जन्म लेता हूँ.... यहाँ मैं 8 कला संपन्न होता हूँ..... हर जन्म मेरी पवित्रता का स्तर निचे उतरता जाता है...

द्वापर के अंत के साथ, मैं लोहयुग-कलयुग में प्रवेश करता हूं.....यहां मैं 1250 वर्षों में 42 जन्म लेता हूं... इस युग के प्रारंभिक जन्मों में मैं तमोगुणी रहता हूं लेकिन कलयुग के अंत में मैं तमोप्रधान बन जाता हूं..... मुझ पर पापों का बोझ बढ़ता ही जाता है..... मेरे दुख, अशांति, पीड़ा और कष्ट चरम सीमा तक बढ़ जाते हैं...

इस समय मेरे रूहानी पिता शिवबाबा का

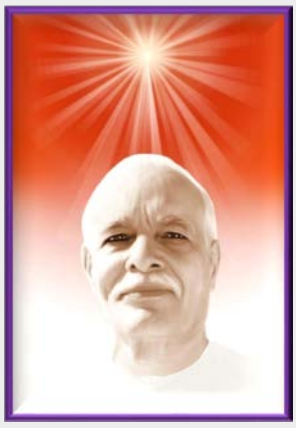

परमधाम से दिव्य अवतरण होता हैं और मुझे प्रजापिता ब्रह्मा के शरीर के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करते हैं... यह मेरा ब्राह्मण के रूप में नया जन्म है... यह विश्वनाटक के चक्र का मेरा अंतिम 84 वा जन्म है.... बाबा की श्रीमत पर चलकर और राजयोग का अभ्यास करके, मैं

सतोप्रधान स्थिति की ओर धीरे धीरे ऊपर चढ़ना प्रारंभ करता हूँ... यहाँ मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर पिता शिवबाबा के साथ अपने सभी संबंधों का आनंद ले रहा हूँ.... और शांति, पवित्रता, प्रेम, आनंद, सुख और शक्ति का अनुभव कर रहा हूँ... यहाँ मै अतिन्द्रिय सुख और परमानंद का अनुभव करता हूँ .... मेरा यह अंतिम ब्राह्मण जन्म हीरे समान सर्वश्रेष्ठ और कल्याणकारी है.....

लोहयुग के अंत में सृष्टि का महाविनाश होता है.... मेरे सभी कर्मिक खाते बाबा की याद में चुकतू होते हैं.... और चक्र के अंत में मैं मेरे मूल वतन परमधाम में वापस जाता हूं.... जो शांति तथा मुक्ति का धाम है... . यहां मैं अपनी पहचान एक निराकार ज्योतिर्बिंदु के रूप में बनाये रखता हूं..... यहाँ शान्तिधाम में कुछ भी साकार नहीं है कोई आकार भी नहीं है.... अनंत तक हर दिशा में सुनहरा लाल प्रकाश फैला हुआ है... इस निराकार बीजरूप अवस्था में, मुझे अत्याधिक शांति और संपूर्ण मुक्ति की अनुभूति हो रही है... यह मेरी सुसुप्त अवस्था है.....

फिर से स्वर्णिमयुग की शुरुआत होते ही, मैं निचे अवतरण करता हूं..... और पृथ्वी पर वापस आता हूं.... और मेरे अभिनय का पुन: हुबहू पुनरावर्तन करता हूँ.... और अनंत बार उसे दोहराता रहूंगा.... बाबा, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद.... मुझे आप पर और व् विश्वनाटक में मेरी भूमिका पर बहुत गर्व है.... ख़ुशी है....

-------- 0 === 0 --------

बी. के. प्रफुल्लचंद्र

सानडिएगो ; युएसए

(M) +91 98258 92710